❀ श्रीवैदेही वल्लभोजयति ❀

❀ सर्वेश्वरी श्रीचारुशीलायैनमः ❀

❀ श्रीमती कृपावत्यै नमः ❀

❀ श्रीजानकी स्तवराजः ❀
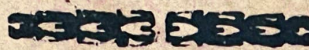
टीकाकार

पं० गोविन्ददासजी 'सन्त'

प्रकाशक

श्री श्री १०८ श्रीमहन्त सियाशरणजी महाराज

स्थान—श्रीवैदेही वल्लभकुंज

तस्य

चरणानुचर चारुशीलाशरण

श्रीराम संस्कृत पाठशाला

स्वर्गद्वार, श्रीअयोध्याजी, जिला-फैजाबाद

प्रथमबार १०००]   सं० २०१६   [मूल्य

मुद्रकः—श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी।

भूमिका

प्राचीनकाल की बात है कि एक समय श्रीशंकर-जी ने अपने परम आराध्य देव श्रीरामचन्द्रजी के निज स्वरूप के दर्शन हेतु दिव्यशत वर्षों तक श्रीराममन्त्र (षडक्षर) का सविधि अनुष्ठान किया। तदुपरान्त भक्त वत्सल श्रीराघवेन्द्र ने उन्हें दर्शन दिया और कहा कि यदि आप मेरे निज स्वरूप का साक्षात्कार चाहते हैं तो मेरी परम आह्लादिनी पराशक्ति श्रीजानकीजी की स्तुति करिये।

यह वही स्तवराज है जिससे कि भगवान श्री-शंकरजी ने श्रीजानकीजी को प्रसन्न किया था। अतः यह सिद्ध है कि जो जन श्रीकिशोरीजी की कृपा चाहते हैं उन्हें नित्य प्रति एक पाठ इस स्तवराजका अवश्य करना चाहिये। आशा है कि भक्तजन इस दिव्य स्तोत्र से लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

विनीत

श्रीसीतारामचरण सरोज

मकरन्द लोलुप भृङ्ग

श्रीफुल्लेश्वर पाठक

वेदान्त शास्त्री व्याकरणाचार्य

❀ श्रीसीतापतयेनमः ❀

श्री सीता मन्त्रजप--विधि

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीसीतामन्त्रस्य श्रीराम ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीसीता देवता। श्रीं बीजम् नमः शक्तिः। श्री-सीतायै कीलकम्। मम चतुर्विधपुरषार्थाभीष्टार्थे वा श्रीयुगलवरमाधुर्यदिव्यमङ्गलविग्रहयोर्नित्यानुभवध्यानसि-द्धये च श्रीसीतामन्त्रजपेविनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः —

ॐ श्रीराम ऋषयेनमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीसीता देवतायै नमो हृदये। ॐ श्रीं बीजाय नमो नाभौ। ॐ नमः शक्तये नमो गुह्यदेशे। ॐ श्रीसीतायै कीलकाय नमः पादयोः। ॐ जपे विनियो गाय नमः सर्वाङ्गे।

पदन्यासः—

ॐ श्रीं नमो मुखे। ॐ सीतायै नमो हृदये। ॐ नमः नमो सर्वाङ्गे।

अक्षर न्यासः—

ॐ श्रीं ललाटे। ॐ सी नासाग्रे। ॐ ता कण्ठे। ॐ यै हृदये। ॐ न नाभौ। ॐ मः पादयोः।

कर न्यासः—

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यांनमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यांनमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यांनमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यांनमः। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यान्नमः ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः।

हृदयन्यासः—

ॐ श्रां हृदयायनमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रुं शिखायै वषट् । ॐ श्रैं कवचायहुम् । ॐ श्रौं नेत्राभ्यांवौषट् ॐ श्रः अस्त्रायफट् ।

ध्यानम्—कौशेयपीतवसनामरविन्दनेत्रां
रामप्रियाऽभयवरोद्यतपद्महस्ताम् ॥
उद्यच्छतार्कसदृशीं परमासनस्थां
ध्याये द्विदेह तनयां सखिभिः सहस्रैः ॥
स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकनतत्पराम् ।
ध्यायेत्षट्कोणमध्यस्थांरामाङ्कोपरिशोभिताम् ॥

श्रीजानकी स्तवराज के पाठ का विनियोग—

ॐ अस्य श्रीजानकीस्तवराजस्तोत्रस्य श्रीरामऋषिः । वसन्ततिलकः छन्दः श्रीसीता देवता-ममधर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थाभीष्टसिध्यर्थेऽथवा श्रीयुगलवरचरणकमलयो-रहेतुकी भक्ति प्राप्त्यर्थे श्रीजानकीस्तवराजस्तोत्रस्य पाठे विनियोगः ।

सूचना—श्रीसीतामन्त्र के विनियोग और न्यास आदि के साथ "माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव" इस मन्त्र से माला की प्रार्थना करके आदि और अन्त में एक एक माला श्रीसीतामन्त्र की जप कर और श्री जानकी स्तवराज का विनियोग करके इस स्तवराज का पाठ करें। निश्चय ही श्रीकिशोरीजी की कृपा से मनोकामना पूर्ण होगी ।

❀ श्रीहरिः ❀

श्रीजानकी-स्तवराज

तां ध्याये स्तवराजेन प्रोक्तरूपां परात्पराम्।
आह्लादिनीं हरेःकाँचिच्छक्ति सात्वतसेविताम्॥१॥

भाषार्थ—वेदादि सच्छास्त्रों द्वारा वर्णित है रूप जिसका ऐसी परसेभी पर आनन्द स्वरूपा वैष्णवों द्वारा सेवित भगवान श्री रामचन्द्र जी की उस किसी शक्ति का स्तवराज द्वारा ध्यान करता हूँ।

❀ श्रुतिरुवाच ❀

कीदृशः स्तवराजोऽयं केन प्रोक्तः सुरेश्वर।
कथ्यतां कृपया देव! जानकीरूपबोधकः॥२॥

भाषार्थ—हे देवताओं के स्वामी! श्री जानकी जी के स्वरूप का ज्ञान कराने वाला यह स्तवराज कैसा है, और किसने कहा है। हे देव! कृपा करके कहिए।

❀ श्रीसंकर्षणउवाच ❀

ब्रवीमि स्तवराजं ते श्रीशिवेन प्रभाषितम्।
श्रुतं श्रीवक्त्रतो दिव्यं पावनानां च पावनम्॥३॥

भाषार्थ—मैं श्रीरामचन्द्रजी के मुख से सुना हुआ और श्री शिवजी के द्वारा कहा हुआ दिव्य पवित्रों को भी पवित्र करने वाले स्तवराज को तुम्हारे लिये कहता हूँ।

चकाराराधनं तस्य मन्त्रराजेन भक्तितः।
कदाचिच्छ्रीशिवो रूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेः परम् ॥४॥

भाषार्थ—श्री रामचन्द्र जी के सर्वोत्कृष्ट (मूल) रूप को जानने की इच्छा करने वाले श्रीशिवजी ने किसी समय भक्ति पूर्वक उन श्री रामचन्द्र जी का मन्त्रराज द्वारा आराधन किया।

दिव्यवर्षशतं वेदविधिना विधिवेदिना।
जजाप परमं जाप्यं रहस्ये स्थितचेतसा ॥५॥

भाषार्थ—एकान्त में (उन श्री शिवजी ने) विधि को जानने वाले स्थित चित्त से तथा वेद की विधि के अनुसार दिव्य सौ वर्ष पर्यन्त परम श्री राममन्त्रराज का जप जपा अर्थात् जप किया।

प्रसन्नोभूत्तदा देवः श्रीरामः करुणाकरः।
मन्त्राराध्येन रूपेण भजनीयः सतां प्रभुः ॥६॥

भाषार्थ—तब भक्तों (वैष्णवों के) भजन करने

योग्य सर्व समर्थ दयालु देव श्री रामचन्द्र जी मन्त्रद्वारा आराधन करने योग्य रूप से प्रसन्न हुए।

❀ श्रीराम उवाच ❀

द्रष्टुमिच्छसि यद्रूपं मदीयं भावनास्पदम्।
आह्लादिनीं परांशक्तिं स्तूयाः सात्वतसम्मताम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—जिस मेरे भावनामय रूप को देखने की इच्छा करते हो तो भक्त (वैष्णव) जन सम्मत मेरी आह्लादिनी परा (सर्वोत्कृष्ट) शक्ति की स्तुति करो।

तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तया विना।
तिष्ठामि न क्षणं शम्भो ! जीवनं परमं मम ॥ ८ ॥

भाषार्थ—हे शिवजी (मैं) उनके सहित आराध्य हूँ उन्हीं से हमको आनन्द है, उन्हीं के हम आधीन हैं, उनसे रहित होकर क्षण भर भी नहीं रहता हूँ क्योंकि वे मेरी परम जीवन है।

इत्युक्त्वा देवदेवेशो वशीकरणमात्मनः।
पश्यतस्तस्य रूपं स्वमन्तर्धानं दधौ प्रभुः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—देवाधि देवों के स्वामी सर्व समर्थ श्रीरामजी ने अपने वश में होने का उपाय इस प्रकार कह कर उन श्रीशिवजी के देखते-देखते अपने रूप को अन्तरध्यान कर लिया।

श्रुत्वारूपं तदा शंभुः तस्याः श्रीहरिवक्त्रतः ।
अचिन्तयत्समाधाय मनः कारणमात्मनः ॥१०॥

भाषार्थ - तब श्रीशिवजी ने उन श्रीजानकीजी के रूप को श्रीरामजी के मुख से सुनकर अपने कारण रूप मन को एकत्र करके ध्यान किया ।

अस्फुरत्कृपया तस्य रूपं तस्याः परात्परम् ।
दुर्निरीक्ष्यं दुराराध्यं सात्वतां हृदयङ्गमम् ॥ ११ ॥
आश्रयं सर्वलोकानां ध्येयं योगिविदां तथा ।
आराध्यं मुनिमुख्यानां सेव्यं संयमिनां सताम् ॥१२॥

भाषार्थ—कठिनता से देखने योग्य, कष्ट से आराधन करने योग्य भक्तों वैष्णवों के हृदय में निवास करने योग्य सब लोगों का आश्रय श्रेष्ठ योगियों के ध्यान करने योग्य मुख्य-मुख्य मुनियों के आराध्य जितेंद्रिय भक्तों के सेवा करने योग्य उन श्रीजानकीजी का परात्पर रूप उन्हीं की कृपा से उन श्रीशिवजी के सामने प्रत्यक्ष प्रकट हुआ ।

दृष्ट्वाश्चर्यमयं सर्वं रूपं तस्याः सुरेश्वरः ।
तुष्टावजानकीं भक्त्या मूर्तिमतीं प्रभाविनीम् ॥१३॥

भाषार्थ- देवताओंके स्वामी (श्रीशिवजी) उन श्रीजानकीजी के आश्चर्य युक्त सम्पूर्ण (नखशिखमय) रूप को देखकर भक्ति के कारण स्वरूप धारण किए (प्रकट हुई) प्रभावशाली श्रीजानकीजी की स्तुति करने लगे ।

॥ स्तुतिप्रारम्भः ॥

❀ चरणारविन्द ❀

वन्देविदेहतनयापदपुण्डरीकं
कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं ॥
सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम् ॥ १४ ॥

भाषार्थ—किशोरावस्था रूपी सुगन्ध से योगियों के चित्त को हरण करने वाले तीनों तापों को नष्ट करने के लिये सर्वदा परम हंस मुनियों से सेवन करने योग्य भक्तों के मानस रूपी भ्रमरों द्वारा भली प्रकार पीए गये पराग वाले ऐसे श्री विदेह कुमारी के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ।

❀ चरणतल ❀

पादस्य यावकरसेन तलं सुरक्तं
सौभाग्यभाजनमिदं हि परं जनानाम् ।
युक्तीकृतं सुभजतां तव देवि नित्यं
दत्ताश्रयं सुमनसां मनसानुरागम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ—हे देवि! आपके चरण के तल महावर से भली प्रकार लाल है निश्चय करके यह भक्तों के परम-

सौभाग्य के स्थान हैं। सुन्दर मन से नित्य प्रति भली प्रकार भजन करने वाले (प्रेमीजन) आपके आश्रय दिये हुए अपने मन के द्वारा अनुराग (प्रेम) को उनमें मिला दिया है।

भाव यह है कि आपके उन प्रेमी भक्तों के अनुराग (प्रेम) का स्वाभाविक लाल रंग ही मानों आप के चरण तल का महावर है।

❀ अंगुली ❀

पादङ्गुलीनखरुचिस्तव देविरम्या
योगीन्द्रबृन्दमनसा विशदा विभाव्या।
त्रैताप क्लान्त्युपशमाय शशांककान्ति
दोषेण किं समुपयाति तुलां युता सा ॥१६॥

भाषार्थ—हे देवि! श्रेष्ठ योगीगणों के मन से सेवित आपके चरणों के अंगुलियों के नख की कान्ति स्वच्छ और बड़ी सुन्दर हैं, क्या दोष (कलंक) से युक्त वह चन्द्रमा की कान्ति तीनों तापों को नष्ट करने के लिए समानता को प्राप्त हो सकती है (अर्थात् नहीं)।

❀ नूपुर ❀

मञ्जीरधीरनिनदं कलहंसकाली
हासाय सा भवति भावयति त्वदीयम्।

किञ्चापरं रसिक मौलिमनो नियन्तुं
दृष्टं मया परमकौशलमत्र तस्य ॥ १७॥

भाषार्थ—हे देवि! वह (प्रसिद्ध) छोटे-छोटे कल हंसों की पंक्ति आपके नूपुरों की गम्भीर ध्वनि की समानता करती हुई हास्य के लिये होती है (अर्थात हास्य को प्राप्त होती है) और दूसरे यहाँ पर मैंने रसिक शिरोमणि श्रीराम के मनको वश में करने के लिये उन नूपुरों के नाद की अत्यन्त चातुरी देखी है। (जो कल हंसों में नहीं पाई जाती)।

❀ गुल्फ ❀

सिद्धीशवुद्धिवररञ्जनगूढगुल्फौ
पादारविन्दयुगलौ जनतापवर्गौ।
विन्दन्ति ते त्रिभुवनेश्वरि! भावसिद्धिं
ध्यायन्ति ये निखिल सौभगभानुभाजौ ॥१८॥

भाषार्थ—हे तीनों लोकों की स्वामिनी! जो पुरुष श्री रामजी की श्रेष्ठ बुद्धि को प्रसन्न करने वाले गूढ़ गुल्फों से युक्त भक्त जनों मोक्ष रूप सम्पूर्ण सौन्दर्य के सूर्य श्रीरामजी की सेवा में रहने वाले आपके दोनों चरण कमलों का ध्यान करते हैं, वे पुरुष भाव सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

❀ चरण ❀

हेमाभिवर्द्धितविभूषणभूषितंते
त्रैलोक्यतेज इव मञ्जुलपुञ्जभूतम् ।
भावामि सुन्दरि, पदं सरसीरुहाभं
भीताभयप्रदमनन्तमनोभिध्येयम् ॥ १९ ॥

भाषार्थ—हे सुन्दरी ! मैं सुवर्ण रचित विभूषणों से शोभित तीनों लोकों के तेज के समान सुन्दरता युक्त पदार्थों के समूह रूप कमल के समान आभा वाले संसार से डरे हुए जनों को अभय देने वाले श्री रामजी के मन के ध्यान करने योग्य आपके दोनों चरणों की भावना करने की इच्छा करता हूँ ।

❀ नितम्ब ❀

चक्राभहारिसुनितम्बयुगं भवत्यः ।
ध्येयं सुधीभिरनिशं रसनाभिषक्तम् ॥
ध्यानास्पदं रघुपतेर्मनसो मुनीनां
भावैकगम्यममरेशनताङ्घ्रिपद्मे ॥ २० ॥

भाषार्थ—हे इन्द्रादिकों से नमस्कृत चरणकमल वाली ! मैं चक्र की कान्ति को हरने वाले बुद्धिमानों द्वारा रात दिन ध्यान करने योग्य क्षुद्र घण्टिका से युक्त

रघुपति के मनके ध्यान के स्थान मुनिजनों के केवल भाव करने योग्य आपके सुन्दर दोनों नितम्बों की भावना करता हूं।

❀ कटि ❀

कौशेय वस्त्र परिणद्धमलंकृतं ते
कार्तस्वराशनिमणि प्रवरप्रवेकैः।
रत्नोत्तमै रसनया ग्रहकान्तिमद्भि-
र्भास्वन्ति निर्मिततया स्वधियन्ति मध्यम् ॥२१

भाषार्थ—हे देवी! भक्त लोग रेशमी वस्त्र से सुशोभित सुवर्ण हीरा और उत्तमोत्तम मणियों से सुशोभित ग्रहों के समान कान्तिमान श्रेष्ठ रत्नों से रचित होने के कारण क्षुद्र घण्टिका से सुशोभित सूर्य के समान दीप्तिमान् आपके कटि भाग का भली प्रकार ध्यान करते हैं।

❀ उदर ❀

अश्वत्थपत्रनिभमम्ब धियोदरन्ते।
भाव्यं भवाब्धितरिकेवलकालनाशे॥
भूयो न भावि जननी जठरे निवास
स्तेषां मनो धरणिजेऽत्र सुलग्नमासीत् ॥२२॥

भाषार्थ—हे संसार समुद्र के लिये नौकारूप, एक मात्र काल का नाश करने वाली, पृथ्वी की पुत्री माता! पीपल के पत्ते के समान बुद्धि से भावना करने योग्य आपका उदर है, जिन भक्तों का ज्ञान इसमें भली प्रकार लग चुका है, उन भक्तों का फिर माता के गर्भ में निवास नहीं होगा।

❁ नाभि ❁

नाभीह्रदं हरिमनःकरिणः कृशांशो
पुष्टिप्रदं प्रचलितं त्रिवलीतरङ्गम्।
राजिसुशैवलनिभं भ्रमिभूतरोम्णां
शान्त्यै तव त्रितपतामतिभावयामः॥ २३॥

भाषार्थ—हे देवी! हम तीनों तापों से तपते हुये की शान्ति के लिये श्री रामजी के मनरूपी हाथी की कृशता को पुष्टि देने वाले और जिसमें त्रिवली रूपतरङ्गें चल रही हैं तथा आवर्त रूप रोमों की पंक्ति से युक्त सुशोभित सुन्दर से बाल के सामान है, ऐसे आपके नाभी कुण्ड की अतिशय भावना करते हैं।

❁ वक्षोज ❁

नीलाभकञ्चुकमणीन्द्रसमूहनिष्कै
वक्षोजयुग्ममतितुङ्गमलंकृत ते।

हारैर्मनोहरतरैस्तरुणि ! क्षितीजे !
सौन्दर्यवारिनिधिवारितरंगसङ्गम् ॥ २४ ॥

भाषार्थ—हे भूमि से उत्पन्न तरुणी (श्री जानकीजी !) (हम) नील कान्ति वाली कञ्चुक और श्रेष्ठ मणी समूह से रचित निष्कों (और) परम मनोहर हारो द्वारा सुशोभित अति ऊँचे सौन्दर्य रूप समुद्र के वारि तरंग के संगम रूप के समान आपके दोनों वक्षोजों की भावना करते हैं।

❀ वाहु ❀

वाहू मृणालमदखण्डनपण्डितौ ते
भीताभयप्रदवदान्यतमौ जनानाम्।
रुक्माङ्गदाङ्कितविटङ्कितमुद्रिकौ तौ
हैरण्यकङ्कणधृतावलयौ भजामः ॥ २५ ॥

भाषार्थ—हे देवी ! हम मृणाल के मद को खण्डन करने में निपुण भक्तों के तथा (संसार भय से) डरे हुए लोगों के अभय दान में अति उदार सुवर्ण रचित अंगदो से चिह्नित और जिनमें मुद्रिकायें सुशोभित हो रही हैं ऐसे सुवर्ण कङ्कणों से युक्त चूडियों को धारण करने वाले आपके उन दोनों बाहुओं को भजते हैं।

॥ कण्ठ ॥

कण्ठं कपोततरुणीगलकान्तिमोषं
भूषैरनेकविधभूषितमम्ब तुभ्यम् ।
ध्यायेम मानसविशुद्धिकृते कृपालो
योगीन्द्रभावितपदे शमदे शरण्ये ॥ २६ ॥

भाषार्थ—हे कृपालु योगीश्वरों द्वारा भावना किये गये हैं चरणारविन्द जिनके ऐसी शान्ति देनेवाली तथा रक्षा करने वाली माता ! (हम) मनको शुद्ध करने के लिये कपोती के गले की कान्ति को हरण करने वाले अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित आपके कण्ठ का ध्यान करते हैं ।

॥ मुखमण्डल ॥

वक्त्रेन्दुमिन्दुचयखण्डितमण्डितांशु
खण्डांशपण्डितमनःपरिदण्डिताशम् ।
सन्मानसाब्जमुदितद्युतिदं वरेण्यं
रामाक्षितारकचकोरमहं भजे ते ॥ २७ ॥

भाषार्थ—मैं चन्द्रसमूह के मद को खण्डित करने वाले किरणों से मण्डित न्यायशास्त्र के पण्डितों के मन को परिदण्डित करने वाले भक्तों के मानस रूपी कमल

को प्रकाशित करने वाले वरण करने योग्य श्री राम के नेत्रों के तारे जिसके चकोर हैं ऐसे आपके चन्द्रमुख को भजता हूं ।

॥ मुख ॥

ताम्बूलरागपरिरंजितदन्तपंक्ति
प्रद्योतिताधरमधःकृतबिम्बरागम् ।
ईषत्स्मितद्युतिकटाक्षविकाशिताशं
वक्त्रं परेशनयनास्पदमाभजे ते ॥ २८ ॥

भाषार्थ—हे देवी ! मैं ताम्बूल के रंग से रंगी हुई दातों की पंक्ति से प्रकाशित है अधर जिसमें बिम्बा फल की लाली को जिसने नीचा कर दिया है मन्द मुस्कान कान्ति और कटाक्ष से सब दिशाओं को विकाशित करने वाले श्रीरामचन्द्र जी के नेत्रों के पात्र आपके मुख को भजता हूँ ।

॥ नकवेसर ॥

नासाग्रमौक्तिकफलं फलदं परेशे
ध्यायन्ति ये च निजजाड्यविनाशहेतो ।
त्रैलोक्यनिर्मलपदं सुखदं त्वदीयं
स्वेच्छाभिकांक्षिण इदं बहुशो रसज्ञाः ॥२९॥

भाषार्थ—हे देवी ! जो बहुत प्रकार से रस को जानने वाले प्रेमी जन आपके सुख देने वाले त्रिलोकी में निर्मल अर्थात् सबसे अधिक निर्मल पद को अपनी इच्छा की चाहना करते हैं वे अपनी जड़ता को विनाश करने के लिये श्री रामजी में (प्रेमाभक्ति रूप) फल को देने वाले इस नासिका के अग्र भाग के मुक्ता फल का ध्यान करते हैं।

॥ नेत्र ॥

ज्ञानं निरंजनमिदं विवदन्ति ये ते
मुह्यन्ति सूरिनिवहास्तरुणीकटाक्षैः।
नालोकयन्ति नितरां तव देवितावद्
दीर्घायुषाक्षियुगमंजनरंजितं ते ॥ ३० ॥

भाषार्थ—(हे देवी !) जो पण्डित समूह यह निरंजन ज्ञान (है ऐसा) विवाद करते हैं, वे जब तक कज्जल से रंजित आपके दोनों नेत्रों को पूर्णतया नहीं अवलोकन करते (अर्थात् आपकी कृपा का आश्रय नहीं लेते) तब तक वे दीर्घायुपर्यन्त (साधना करते हुए भी) तरुणियों के कटाक्ष से मोहित होते रहते हैं।

॥ भौंहें ॥

भ्रूवल्लरीविलसितं जगदाहुरीशे
व्यासादयो मुनिवरास्तुत एव नित्यम् ।
नाशाय तस्य तरुणीतिलके त्वदीया
पाशीकृता हरिमनोमृगवन्धनाय ॥३१॥

भाषार्थ—हे तरुणियों में तिलक रूप अर्थात् शिरोमणी, सर्व समर्थ श्री जानकीजी ! व्यास आदि मुनि श्रेष्ठ नित्य स्तुति करते हुए कहते हैं, कि आपकी भ्रूवल्लरी जगत् के विलाश और नाश के लिए तथा श्रीरामजी के मनरूपी मृगको बाँधने के लिए पाशरूप है।

॥ भाल ॥

भालं विशालमतिसौभगभाजनं ते
सिन्दूरविन्दुरुचिरद्युतिदीप्तिमन्तम् ।
पिन्डीकृतः किमुत राग इतीव तस्मिन्
प्रद्योतते जननि जागतजन्मभाजाम् ॥३२॥

भाषार्थ--हे माता ! सिन्दूर के बिन्दु की सुन्दर कान्ति से प्रकाशमान अत्यन्त सौन्दर्य का स्थान आपका विशाल भाल है, क्या संसार में जो प्राणी हैं उनका

प्रेम उस भाल में इकट्ठा (गोलाकार) हो गया है, जो अत्यन्त प्रकाशमान हैं।

॥ कर्ण ॥

आदर्शवर्तुलकपोलविलोललोलं
कर्णावतंसयुगलँ जनजाड्यनाशम्।
सूर्यादिकान्तिहरमाश्रयमोजसांते
तीव्रं धिया धरणिजे स्वधियन्तिधीराः ॥३३॥

भाषार्थ--हे पृथ्वी पुत्री! धीर पुरुष दर्पण के समान आपके गोल कपोलों में, अतिशय चञ्चल, अर्थात् हिलते हुए भक्तों की अज्ञानता को नाश करने वाले सूर्यादि ग्रहों की कान्ति को हरने वाले तेजों के आश्रय भूत आपके दोनों कर्ण भूषणों को तीव्र बुद्धि से ध्यान द्वारा प्राप्त करते हैं।

॥ कर्ण फूल ॥

कालोविभेति जगतामतिभद्रकस्ते
जैवातृको भवदसीमगुणो यतो सौ।
सर्वातिवल्लभतया भजनीयरूपे
मन्यामहे हरिरिति श्रुतिभूषसारम् ॥ ३४ ॥

भाषार्थ—हे भजन करने योग्य रूप वाली!

संसार मात्र का अति भक्षक काल आपसे डरता है इससे यह चन्द्रमा ताप हरण करने वाला है इस कारण सबको अति प्रिय होने से निःसीम गुण वाले (आपके) श्रवणों का श्रेष्ठ भूषण हुआ है ऐसा हम मानते हैं।

❋ केशपाश ❋

सीमन्तमम्बतव सुन्दरतातिसीमं
मुक्ताविभूषितमलं समभागभाजम्।
निःसीमतापदकृते यतयो यतन्ति
जानीमहे महितवन्दितसीममूर्ते ॥ ३५ ॥

भाषार्थ—हे पूज्यजनों से वन्दित सीमाभूत मूर्ति माता! शिर के समभाग स्थान में स्थित मोतियों से विभूषित सुन्दरता की पराकाष्ठा रूप आपकी माँग (केशपाश) का सनकादि मुनि श्रेष्ठ सीमा रहित स्थान की प्राप्ति के लिये अतिशय यत्न करते हैं (अर्थात् ध्यान करते हैं) ऐसा हम जानते हैं।

❋ वेणी ❋

कालाहिभीतिभजतामहिभोगभिन्ना
पायात्परेश्वरिसतामवती सदानः।
एणीदृशस्तव विशालतरा नुवेणी
दर्भाग्रभागसदृशी सुदृशां त्रिलोक्याः॥३६॥

भाषार्थ—हे परेश्वरी ! कालरूपी सर्प के भय से भजन करने वाले सज्जनों की रक्षा करने वाली सर्प के शरीर सदृश दर्भ के अग्र भाग के समान त्रिलोकी की सुन्दर नेत्र वाली (देवियों के मध्य में) मृगी के समान नेत्र वाली आपकी अति विशाल वेणी हमारी सदा रक्षा करें ।

❀ साढ़ी ❀

साटी सुसूक्ष्मतरातिगतानि नीला
सौवर्ण सूत्र कलिता कृपया वृताते ।
भर्तुःस्वरूपमनुभावयतां जनानां
प्रीत्यै करोषि परदेवि यदापिधानम् ॥३७॥

भाषार्थ—हे परदेवि ! अपने भर्ता श्री रामजी के स्वरूप के भजन करने वाले जनों को प्रीति के लिये (जिसको आप) धारण करती हो, वह साढ़ी आपकी कृपा से पूर्ण है और सुवर्ण सूत्र से रचित है, अति नील है तथा सूक्ष्मतरता को अतिक्रमण कर गई है । अर्थात् अति झीनी है ।

❀ स्वरूप वर्णन ३८ से ४३ ❀

पारे गिरां गुणनिधे ! श्रुतयो वदन्ति
रूपं त्वदीयमपरं मनसोऽप्यगम्यम् ।

साक्षात् कथं सरसिजाक्षि भवेद्गते ते
बुद्धौ कृपामनु कृशोदरि मादृशां तत् । ३८॥

भावार्थ—हे गुणनिधे कमल नयनी कृशोदरी ! वेद आपके अपर रूप को वाणी से परे (और) मनसे भी अगम्य कहते हैं वह रूप आपकी कृपा के बिना हम जैसों की बुद्धि में कैसे साक्षात अनुभव को प्राप्त हो सकता है।

किं चित्रमत्र जननि ! प्रभया प्रकाश्यं
विश्वं वदन्ति मुनयस्तव देवि ! देवाः ।
जाताश्रयस्त्रिभुवनैर्गुणतोभिवन्द्य
स्त्राणादिकर्म विभवं परमस्य यस्याः ॥३९॥

भावार्थ—हे देवी (श्री जनक नन्दिनी) माता ! मुनिगण (और) देवगण विश्व को आपकी कान्ति से प्रकाशित कहते हैं इस विश्व के रक्षणादि कर्म को जिन (श्री जानकी जी) का सर्वोत्कृष्ट वैभव बतलाते हैं तब आपका आश्रय लेने वाला जन उत्तमोत्तम गुणों से तीनों लोकों में सब प्रकार वंदनीय हो इसमें क्या आश्चर्य है।

वेदास्तवाम्ब ! विवदन्ति निजस्वरूपं
नित्यानुभूतिभवभावपराः परेशैः ।

निर्णेतुमद्य यतयस्तपसा यतन्ते
बोधाय पादसरसीरुहयुग्मभृङ्गाः ॥४०॥

भाषार्थ—हे माता! वेद ईश्वरों के सहित आपकी नित्य अनुभूति से उत्पन्न हुए भाव में परायण होकर आपके निज स्वरूप का वर्णन करते हैं उसी स्वरूप के ज्ञानार्थ निर्णय के लिये मुनि श्रेष्ठ दोनों चरणकमलों के भृङ्ग होकर आज पर्यन्त तपके द्वारा यत्न करते हैं (अर्थात् ध्यान करते हैं)।

जातं त्वदेव नितरां जगतां निदानं
मन्यामहे तदिदमम्ब! कृतं श्रुतीनाम्।
सर्वं यतः खलु विचेष्टितमाशु शक्तेः
कार्यं हि कारणगुणानवलम्ब विद्यात् ॥४१॥

भाषार्थ—हे माता! लोकों का अत्यन्त आदि कारण (महत्तत्व दिक) आपसे ही उत्पन्न हुआ है इस प्रकार यह श्रुतियों का अभिप्राय हम मानते हैं, यह सम्पूर्ण जगत् शक्ति का ही शीघ्र चेष्टा रूप है क्योंकि निश्चय ही कार्य कारण के गुणों को अवलम्बन करके स्थित होता है।

जानीमहे जननि! ते नयनारविन्द
स्योन्मीलनेऽजनि जगत् त्त्रय तन्निमीलात्।

वैषम्यशून्यसमतां समुपागते य
त्स्यादस्य पालनमसंशयमस्य नूनम् ॥४२॥

भाषार्थ—हे माता श्री जानकी जी ! आपके नयनारविन्द के खोलने से संसार उत्पन्न होता है, उनके बन्द करने से इस (संसार) का नाश होता है (और) जिनके खुलने और बन्द होने की क्रिया से विरत होकर एक समता प्राप्त होने पर इस (संसार) का निस्सन्देह पालन होता है, ऐसा निश्चय ही हम जानते हैं।

ज्ञातंत्वदीयमपरं चरितं विशालं
भावंभवे ननुनिजे प्रकटीकरोषि।
प्रेम्णैव तैः प्रथमतः परमानुभावं
भाव्यं पदाब्जमनिशं स्वजनैरतस्ते ॥४३॥

भाषार्थ—(हे देवी) आपका और भी चरित्र हम जानते हैं निश्चय करके आप अपने चिन्मय स्वरूप में महाभाव प्रकट करती हैं इस कारण उन भक्तों द्वारा पहले ही से परम प्रकाश वाले आपके चरण कमल निरन्तर प्रेम से ही भावना किए जाते हैं।

येषामदः परमवस्तु च तज्जनानां
प्रद्योतते जनकजाचरणारविन्दम्।

सर्वं समीक्ष्य इह कर्ममनोवचोभि-
र्ब्रह्मस्वरूपमतिदुर्लभतानुसेव्यम् ॥४४॥

भाषार्थ—हे देवी ! जिन भक्तों को यह (श्रीजानकी जी के) चरणारविन्द ही परम पुरुषार्थ रूप प्रकाशित होते हैं उन भक्तों को इस संसार में कर्म, मन, वचन द्वारा सब देखकर अति दुर्लभलता से सेवन करने योग्य ब्रह्म का स्वरूप प्रतीत होता है।

किं दुर्लभं चरणपङ्कजसेवया ते
पूर्णा रमन्ति रमणीयतया त्रिलोक्याम्।
वस्तु प्रकाशविशदं हृदये त्वदीयं
तेषामहो किमुत साधनकोटियत्नैः ॥४५॥

भाषार्थ—हे देवी ! आपके चरण कमलों की सेवा करने से क्या दुर्लभ है (आपके भक्त लोग) सेवा कार्य से पूर्ण रूप से रमण करते हैं (जिनके) हृदय में स्वच्छ-मय प्रकाश स्वरूप वस्तु आपके चरणारविन्द हैं, अहा! उन भक्तोंको करोड़ों साधनोंके प्रयत्नों से क्या प्रयोजन है।

धन्यास्त एव तव देवि पदारविन्दं
स्यन्दायमानमकरन्दमहर्निशं ये।

भृङ्गायमानमनसो नितरां भजन्ते
भावावबोधनिपुणाः परदेवतायाः ॥४६॥

भाषार्थ—हे देवी ! भाव के परिज्ञान में निपुण जो भक्त सर्वोत्कृष्ट देवता रूप आपके बहते हुए चिन्मय मकरन्द वाले चरणारविन्दों को रात दिन अपने मनको भ्रमर बनाते हुए पूर्णतया सेवन करते हैं, वे ही धन्य हैं।

पादाब्जरागपरिरञ्जितचित्तभृङ्गो
येषां समीक्ष्य इह जातमिदं स्वरूपम्।
तेषां न किं प्रवदते परितो वरिष्ठं
साध्यं भवेदिह परत्र न किञ्चिदन्यत् ॥४७॥

भाषार्थ—(हे देवी !) इस (ध्यानगम्य) प्रकट हुए स्वरूप को देखकर इस भूलोक पर जिन भक्तों का चित्त रूपी भ्रमर आपके चरण कमलों के अनुराग से पूर्णतया रञ्जित हो गया है, उन भक्तों को इससे अधिक श्रेष्ठ कौन नहीं बता सकता है ! (फिर उन भक्तों के लिए) इस लोक (और) परलोक में दूसरी कुछ भी (साध्य वस्तु) नहीं है।

चुम्बन्ति चिद्घनमहो मकरन्दमस्या
देवैर्मुनीन्द्रनिचयैरतिदुर्लभं ते।

पादाब्जयोरतिविकाशविलासवोध
स्यादेव देवि तवकान्तनिजस्वरूपे ॥४८॥

भाषार्थ—हे देवी ! (जो भक्त) देवता (तथा) मुनीन्द्र समूह को अति दुर्लभ इन आप श्री जानकीजी के चरणारविन्दों के चिद्धन मकरन्द को पान करते हैं (उन भक्तों को) आपके कान्त श्री रामजी के निज स्वरूप में अत्यन्त प्रकाश युक्त विलास का बोध होता ही है।

यावन्न ते सरसिजद्युतिहारिपादे
नस्याद्रतिस्तरुनवाङ्कुरखण्डिताशे।
तावत्कथं तरुणिमौलिमणे जनानां
ज्ञानं दृढंभवति भामिनी रामरूपे।४९॥

भाषार्थ—हे तरुणियों में शिरोमणी भामिनी ! जब तक आपके (इन) वृक्षों के नवीन अङ्कुर की शोभा को खंडन करने वाले (तथा) कमल की शोभा को हरण करने वाले चरणकमलों में प्रेम नहीं हो तब तक भक्तों को श्रीराम रूप में दृढ़ ज्ञान कैसे हो सकता है।

साक्षात्तपोव्रतयमैर्नियमैः समीहे
कर्तुं कृपामृतमिहप्रसभंस्वरूपम्।

नाथस्यते श्रुतिवचो विषयंकथंस्या
न्मूढो वृथोत्सृजति देवि सुखान्यमूनि ॥५०॥

भाषार्थ—हे देवी! वेद वचनों के अविषय अर्थात् वेद बचन भी जहाँ नहीं पहुंच सकते हैं ऐसे कृपामृत से पूर्ण आपके स्वामी श्रीराम जी के स्वरूप को इस संसार में तप व्रत यम (तथा) नियमों द्वारा बलात्कार से प्रत्यक्ष करने के लिए चेष्टा करता है वह मूर्ख यहाँ के सुखों को व्यर्थ ही छोड़ता है (स्वरूप दर्शन आपकी कृपा के बिना) कैसे हो सकता है।

योगाधिरूढमुनयो हरिपादपद्मे
ध्यायन्ति ये चरणपङ्कजयुग्ममन्तः।
वाञ्छन्ति विघ्नशततोप्यनिवार्यमाणां
भक्तिं भवाब्धितरणाय कृपापयोधे ॥५१॥

भाषार्थ—हे कृपा के समुद्र श्री जानकी जी! जो योग में तत्पर मुनि लोग संसार समुद्र को पार करने के लिये भगवान् श्रीराम के चरण कमलों में सैकड़ों विघ्नों से भी निवारण नहीं की जाने वाली भक्ति को चाहते हैं, (वे भक्त) आपके दोनों चरण कमलों का अन्तःकरण में ध्यान करते हैं।

चार्वङ्किते चरणचारणवन्दिसंगं-
मह्यं विदेह तनये परिदेहि नान्यम् ।
याचे वरं वरविदां वरदे भवत्या
येनामुना तव धवे मम रञ्जना स्यात् ॥५२॥

भाषार्थ—हे श्रेष्ठ ज्ञानियों को वरदान देने वाली सुन्दराङ्गी श्री जानकी जी ! चरण सेवा करने वालों को प्रणाम करने वाले अर्थात् भक्तों के भक्तों का संग मुझे दान करिये । जिस इस (संग) से आपके स्वामी श्री-राम में मेरी अनुरक्ति होवे । आपसे और कोई दूसरा वर नहीं माँगता हूँ ।

याचेऽहमम्ब रघुनन्दनमूर्तिभावं
सार्द्धं त्वयातिदृढमञ्जलिनाविशेषम् ।
त्वं देहि वेत्तृवरदे मुनिसंघमुख्या
मन्यन्तिवल्लभतरां स्वपतेर्भवन्तीम् ॥५३॥

भाषार्थ—हे माता ! मैं आपके साथ विशेष रहित (अर्थात् न्यूनाधिकता रहित अतिदृढ श्री रघुनन्दन के स्वरूप में भाव (अत्यन्त प्रेम) को अञ्जलिबद्ध होकर माँगता हूँ । सर्वज्ञों को वरदान देने वाली ! आप (यह) दीजिये, मुनि समूहों में जो मुख्य है (वे) आपको अपने पति श्री रामचन्द्र जी की अतिवल्लभा मानते हैं ।

❀ उपसंहार ५४ से ६० ❀

एवं स्तुत्वा परं रूपं जानक्या जाड्यनाशनम।
उपरराम शन्तात्मा योगेश्वरः सदाशिवः । ५४॥
निरीक्ष्य तन्मुखाम्भोजं भावयन् रूपमद्भुतम्।
कांक्षं स्तस्याः परांभक्ति पादपङ्कजयोर्द्दढाम् ॥५५॥

योगेश्वर शान्तस्वरूप श्री सदाशिवजी जड़ता (अज्ञान) को नाश करने वाले श्री जानकी जी के पर (सर्वोत्कृष्ट) रूप को इस प्रकार स्तुति करके उनके मुख कमल को देखकर अद्भुत रूप की भावना करते हुए (तथा) उनके चरण कमलों में दृढ (और) परा भक्ति की इच्छा करते हुए। उपराम को प्राप्त हुए।

उवाच तं वरारोहा जानकी भक्तवत्सला।
एवमस्तु महादेव यत्त्वयोक्तं च नान्यथा ॥५६॥

भक्तवत्सला परम सुन्दरी श्री जानकी जी उन श्री शिवजी को कहा हे महादेव जी जो आपने कहा है, वैसा ही हो इसके विपरीत नहीं।

अन्यत्ते कांक्षितं ब्रूहि दास्यामि देवदुर्लभम्।
सत्यां मयि कृपोन्मुख्यां न किञ्चिन्तस्य दुर्लभम् ॥५७॥

भाषार्थ—आपका और जो इच्छित हो (वह) कहो। देवदुर्लभ (वस्तु भी) दूँगी मेरे प्रसन्न होने पर उस पुरुष के कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

प्रसन्नवदनां दृष्टवा सोपि देवशिरोमणिः।
ययाचे वरमात्मीयं रहस्यं भावबोधकः ॥५८॥

भाषार्थ—देवताओं में मुख्य श्री शिवजी ने भी प्रसन्न मुख उन श्री जानकी जी को देखकर अपने अभि-प्राय को प्रकट करने वाले रहस्य (एकान्त उपासना) का वरदान माँगा।

प्रादात्तस्मै वदान्या सा यद्यन्मनसि काङ्क्षितम्।
वरं-वरेश्वरी साक्षात्पुनरुवाच सा हितम् ॥५९॥

परम उदार उन श्री जानकी जी ने श्री शिवजी के लिये जो-जो मन में इच्छित था (वह-वह) बरदान दिया फिर साक्षात् बरदान देने में समर्थ (श्री जानकी जी ने) निश्चय करके उन श्री शिवजी को कहा।

अयंपवित्रमौलिर्मे स्तवराजः त्वयाशिव।
प्रकाशितोति गोप्योपि मत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥६०॥

हे देव श्रेष्ठ, शिवजी! पवित्रों में शिरोमणि अत्यन्त गोपनीय भी यह मेरा स्तवराज मेरी कृपा से आपने प्रकाशित किया है।

❋ फल श्रुति निष्काम भाव से ❋

यः पठेदिदमग्रे मे पूजाकाले प्रयत्नतः।
तस्येहामुत्र किञ्चिन्न वस्तुस्याद्दृगगोचरम् ॥६१॥

भाषार्थ—पूजा के समय जो पुरुष मेरे आगे इस स्तवराज का प्रयत्न से पाठ करे उस पुरुष के इस लोक में (और) परलोक में दृष्टि का विषय न हो (ऐसी) कोई वस्तु नहीं है।

❋ फलश्रुति-सकाम भाव से ❋

धनं धान्यं यशः पुत्रानैश्वर्यमतिमानुषम्।
प्राप्येहामोदते भूयो मत्पदं तद्व्रजेत्सह ॥६२॥

भाषार्थ—धन को, धान्य को, यश को, पुत्रों को, सब मनुष्यों से अधिक हो ऐसे, ऐश्वर्य को इस संसार में प्राप्त होकर प्रसन्न होता है। फिर वह स्पष्ट रूप से उस मेरे पद को जाता है।

यद्यल्लोकोत्तरं वस्तु त्रिषु लोकेषु दृश्यते।
तत्सर्वमस्य पाठेन प्राप्नुयाद्भुविमानवः ॥६३॥

भाषार्थ—तीनों लोकों में जो-जो अलौकिक वस्तु दिखाई देती है वह सब इसके पाठ से पृथ्वी पर मनुष्य को प्राप्त हो सकती है।

❀ आज्ञा ❀

इदं मे परमैकान्तं रहस्यं सुरसत्तम।
न प्रकाश्यं त्वया शम्भो शठाय भावदूषिणे ॥६४॥

भाषार्थ—हे देव श्रेष्ठ शिवजी! इस मेरे अत्यन्त गोपनीय रहस्य को भाव दूषित मूर्ख के प्रति तुम नहीं प्रकाशित करना।

भक्तिर्यस्यातिदेवेशे सर्वैश्वर्ये तथा मयि।
गुरौ सर्वात्म भावेन विद्यतेभक्तिरुत्तमा ॥६५॥
तस्मै देयंत्वया शम्भो भावनार्द्रहृदे गुरौ।
सर्व भूत हितार्थाय शान्ताय सौम्यमूर्तये ॥६६॥

भाषार्थ—तुम जिस पुरुष की सब ऐश्वर्यों से युक्त देवताओं के स्वामी श्री राम जी में उसी प्रकार

मुझमें सर्वात्म भाव से भक्ति हो (और) गुरु में उत्तमा भक्ति विद्यमान हो (ऐसे) सौम्यमूर्ति शान्त स्वरूप सर्व प्राणियों के हित में परायण श्री गुरु में भावनायुक्त प्रेमार्द्रहृदय वाले उस भक्त के लिये देना।

इत्युक्त्वा भावनामूर्तिः सीता जनक नन्दिनी।
कृपापात्राय तस्मै सा पुनः प्रादाद्वरान्तरम् ॥६७॥

भाषार्थ—ध्यान में प्राप्त हुई है मूर्ति जिनकी ऐसी उन जनक पुत्री श्रीसीताजी ने कृपा पात्र उन श्री शिवजी के लिये ऐसा कह कर फिर और भी बरदान दिया।

सर्वदुःखप्रशमनं जानक्यास्तु प्रसादतः ॥६८॥

भाषार्थ—फिर श्री जानकी जी की कृपा से सब दुःख विलीन हुये।

॥ इति शुभम् ॥

श्रीकिशोरीजी का चरमशरणागत मंत्र

ॐ कृपारूपिणिकल्याणि रामप्रिये श्रीजानकी।
कारुण्यपूर्णनयने दयादृष्ट्यावलोकये ॥

श्रीकिशोरीजी का व्रत

पापानां वा शुभानां वा वधार्हाणां पलवङ्गम ।
कार्यं करुणमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ॥

अथ शरणागति-पञ्चक

ॐ सर्व जीव शरण्ये श्री सीते वात्सल्य सागरे।
मातृमैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम् ॥१॥
ॐ कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्य्यैक स्वरूपताम्।
सर्वं मङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं व्रजे ॥२॥
ॐ शरणागत दीनार्त परित्राण परायणाम् ।
सर्वस्यार्ति हरेणैक धृतव्रतां शरणं व्रजे ॥३॥
ॐ सीतां विदेह तनयां रामस्य दयितां शुभाम्।
हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं व्रजे ॥४॥
ॐ अस्मिन् कलिमला कीर्णे काले घोर भवार्णवे।
प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्राम प्रियां विना ॥५॥

श्रीलक्ष्मण उवाच—

प्राणनाथ जगद्बन्द्य सर्वागम् विशारद ।
त्राहि माम् पुण्डरीकाक्ष श्रीसीतायःस्तवं शुभम् ॥१॥
कथयतां मे देवेश त्रैलोक्येचापि दुर्लभम् ।
सीताया स्तवराजस्य श्रोतुमिच्छामि राघव ॥ २ ॥

श्रीराघव उवाच—

शृणु वत्स महातत्वं महागुह्यं महापरम् ।
महा गोप्यं महादिव्यं महादेव सदाप्रिय ॥ ३ ॥
महालक्ष्मी महाविद्या महामुक्तिप्रदायकम् ।
महासंकटानि नश्यन्ति सीतास्तवं पठेद्यदि ॥ ४ ॥

अथ विनयोगः

ॐ अस्य श्रीसीतास्तवराज स्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः श्रीसीता देवता श्रीसीता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ नीलाम्बर धरां देवीं नीलांगःहृदि संस्थितां ।
नीलाम्भोजाभिनयनां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१॥
गौराङ्गींस्वच्छवदनां चारुचन्द्रनिभाननाम् ।
सर्व सद्गुणसम्पन्नां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ २ ॥
चारुचम्पकदाऽभां वैकरपद्मधृताम्बुजां ।
रक्तोत्पल पदां वन्दे वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥३॥

ऋषिशोणितसंभूतां जनकऽह्लादकारिकाम्।
रामपार्श्वगतां सीतां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ४ ॥

श्रीरामप्रियां रामां राजादशरथस्नुषाम्।
वनमार्गगतां सीतां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ५ ॥

चित्रकूटस्थितां चित्रां चित्रगंधानुलेपनाम्।
अनुसुइयाप्रवसनां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ६ ॥

अत्र्याश्रमगतां सीतां सुतीक्ष्णसुखप्रदाम्।
शरभङ्गप्रार्थितां सीतां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ७ ॥

अगस्त्येनार्चितां पथ्यां सर्वकालफलप्रदाम्।
कृतपंचवटावासां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ८ ॥

दूषणादिविनाशिनीं शबरीदुःखसूदनीम्।
पम्पातीरगतां सीतां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥९॥

ऋष्यमूकगतां सीतां वालीप्राणविनाशिनीम्।
समुद्रलंघनां देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ १० ॥

जटायुमोक्षदां बालां प्रापणीयवरप्रदाम्।
बागाशोकप्रतिष्ठानां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥११

रावणादिविनाशार्थां राक्षसी कम्यकारिकाम्।
विभीषणश्रीदां दिव्यां वन्दे श्रीरामवल्भाम् ॥१२॥

साकेत गमनां शुभ्रां सुमुखीं कंजलोचनाम् ।
विश्वम्भरीं जगन्नमातर्वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१३॥
कौशल्याऽह्लादि कारकां सहस्र शीर्ष विनाशिनीम् ।
समस्त देवतां भद्रां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१४॥
वन्दे विदेहतनियां वन्दे जगत्कारिणीम् ।
वन्दे दानवहारिकां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१५॥
वन्दे दाक्षिण्य सम्पन्नां वन्दे भरत वन्दिताम् ।
वन्दे मनोरमां रामां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥१६॥
इतिदं कवचं वत्स अकीलमपि दुर्लभम् ।
महात्म्यम् स्तव राजस्य कोटिकल्प तरु प्रभम् ॥१७॥
एककालं द्विकालंवा त्रिकालं विश्व पाठकं ।
सायुज्यं सामीप्य कंचैव सालोकात्वं प्रलभ्यते ॥१८॥
कुम्भयोनि तरुं स्थित्वा मासकार्तिक मेवच ।
त्रिशंत् वक्तेति पाठं पूजां कृत्वा दिने दिने ॥१९॥
स्तवराज भवेत् सिद्धिर्जायते नात्र संशयः ।
सर्वलक्ष्मी भवेच्चैव श्रद्धा पाठ सतकृत ॥ २० ॥
चराचराणां सर्वेषां पाठकृद्य भय नाशनम् ।
कालांतरे मृत्युश्च नाशनं स्मरते स्वयम् ॥ २१ ॥
॥ (इति श्रीरुद्रयामल तंत्रे राम लक्ष्मण संवादे
श्रीसीता स्तवराजं संपूर्णम्)

नित्य प्रातः कुंज में होने वाली स्तुति

जै जनकनन्दनिजगतबन्दिनि जनअनन्दिनिजानकी ।
रघुवीर नयन चकोर चन्दिनि वल्लभा प्रियप्राणकी ॥
तव कंजपद मकरंद सेवत योगिजनमन अलि किये ।
करिपान गिनत न आनही निर्वाण सुखआनत हिये ।
सुखखानिमंगलदानिजनजियजानिशरणजोजातहैं ।
तबनाथसबसुखसाथ करि तेहि हाथरीझिविकातहैं ॥
ब्रह्मादि शुकसनकादिसुरमुनिआदिनिजमुखभाषहीं ।
तवकृपानयनकटाक्षचितवनिदिवसनिशिअभिलाषहीं ।
तनुपाय तुम्हहिं विहाय जड़मति आन मानतदेवहीं ॥
हत भाग्य सुरतरु त्याग करि अनुराग रेड़हिं सेवहीं ।
यह आश रघुवर दासकी सुख राशि पूरण कीजिये ।
निज चरण कमलसनेह जनकविदेहजा वर दीजिए ॥
श्रीरामचन्द्रकृपालु भजमन हरण भव भय दारुणम् ।
नव कंजलोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्पअगणित अमितछबि नवनील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुँ तड़ितरुचिशुचिनौमिजनकसुतावरम् ।
भजदीन बन्धु दिनेश दानवदलन दुष्टनिकन्दनम् ॥

रघुनन्द आनन्दकंद कौशल चन्द्रदशरथ नन्दनम् ॥
सिर क्रीट कुंडल तिलक चारुउदार अंग विभूषणम् ।
आजानु भुज शरचाप धरसंग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति बदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवासकरि कमादि खल दलगंजनम् ।
नीलांबुजश्यामलकोमलाङ्गम्सीतासमारोपितवामभागं
पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथम् ॥

❋ संध्याकालीन स्तुति ❋

वन्दे विदेह तनया पद पुण्डरीकं कैशोर सौरभ समाहृत योगिचित्तम् । हन्तुं त्रिताप मनिशं मुनि हंस सेव्यं सन्मानसालि परिपीत पराग पुंजम् ॥ अमल कमल नेत्रं जानकी प्रेम पात्रं सजल जलधि गात्रं पीत वस्त्रं दधातु । उरसि वनजमालं कौस्तुभा-शक्ति कंठं स्मृति रुचिर विकासं रामचन्द्रं भजेहम् ॥ दूर्वा दलं द्युति तनुं तरुणाब्ज नेत्रं हेमाम्बरं वर विभूषण भूषितांगम् । कन्दर्प कोटि कमिनीय किशोर मूर्तिं पूर्तिं मनोरथ भुवंभ्भज जानकीशम् ॥

❋ श्री हनुमान स्तुति ❋

अतुलित वलधामं स्वर्ण शैलाभ देहं । दनुज-वन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ सकल गुण निधानं वानराणामधीशं रघुपतिवर दूतं वात जातं नमामि ॥ मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये । सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्यमध्यम् अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥

❋ अथ श्रीजानकी गायत्री मंत्र ❋

ॐ जानक्यै विद्महे रामवल्लभायै धीमहि तन्नो सीता प्रचोदयात् ।

❋ श्रीराम गायत्री ❋

ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

* अनंत श्री बावन जी महाराज का सद्उपदेश *

* ऐवं शृँगार रस अनन्यता *

* गजल *

श्री वैदेही प्राण बल्लभ सुमिरन किया करौ ।
नैनन से रूप माधुरी लखिकै जिया करो ॥
शिरपै सुचिन्ह अर्द्धचन्द्र बिन्दु श्री अरुण ।
जुग रेख शुक्ल पीत चन्द्रका दिया करौ ॥
दुहुँ ओर नाम राजै वैदेही बल्लभ ।
भृकुटी के अन्त मुद्रका जुग जुग हिया करौ ॥
कंठी जुगल मनोहर धनुवान कर लिखो ।
श्री जुगल मंत्र राज को नित जप लिया करौ ॥
हाथों से कीजिये सदा कैंकर्य सुखारी ।
श्री रंग महल मध्य निज सुतनु तिया करौ ॥
उत्तम सु मुक्ति भुक्ति कर्म धर्म बासना ।
सब त्याग कर अनन्य टेक द्रढ़ धिया करौ ॥
बिस्वास आस राखो श्री चारु शीला की ।
श्री मत्कृपावती चरण सुधा पिया करौ ॥

येही बिहारणी अली मानो बचन भली ।
हठ कर कुसंग त्याग रशिक संग किया करौ ॥

❊ कवित्त ❊

तिलक ललाट बर बिन्दु अर्धचन्द्र जुत ।
कर्ण फूल बन्दी बर चन्द्रका सम्हारी की ॥
नाशामणि बैसर बिलोक मुशकान मृदु ।
चितवन कृपा को रसो दधि सुखारी की ॥
हृदय बर हार नव कंठी कंचुकी सुधारि ।
चूरी कर हेम तार साड़ी नील धारी की ॥
श्री जनक दुलारी छबि अद्भुत अनूप अति ।
कहो जयति बैदेही स्वामिनी हमारी की ॥

❊ दोहा ❊

जयति अनंत अनंत श्री जय गुरू दया निधान ।
जय सद्ज्ञान शिरोमणि जय बावन भगवान ॥
[बोल श्री बावन जी महाराज की जय]